

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री गोदाष्टौत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রী গোদাষ্টোত্তরশতনামস্তোত্রম্ ॥

শতমখমণি নীলা চারুকল্হারহস্তা  
স্তনভরনমিতাগ্নী সান্দ্ররাৎসল্যসিন্ধুঃ।  
অলকরিনিহিতাভিঃ স্রগ্ভিরাকৃষ্টনাথা  
রিলসতু হৃদি গোদা রিষ্ণুচিত্তাঅজা নঃ ॥

শ্রীরঙ্গনাথকী গোদা রিষ্ণুচিত্তাঅজা সতী।  
গোপীরেষধরা দেবী ভূসুতা ভোগশালিনী ॥ 1 ॥

তুলসীকাননোদ্ভূতা শ্রীধন্বিরপুররাসিনী।  
ভট্টনাথপ্রিয়করী শ্রীকৃষ্ণহিতভোগিনী ॥ 2 ॥

আমুক্তমাল্যদা বালা রঙ্গনাথপ্রিয়া পরা।  
রিশ্বরম্ভরা কলালাপা যতিরাজসহোদরী ॥ 3 ॥

কৃষ্ণানুরক্তা সুভগা সুলভশ্রীঃ সুলক্ষণা।  
লক্ষ্মীপ্রিয়সখী শ্যামা দযাধিতদৃগঞ্চলা ॥ 4 ॥

ফল্গুন্যারিভরা রম্যা ধনুর্মাসকৃতব্রতা।  
চম্পকাশোকপুল্লাগমালতীরিলসৎকচা ॥ 5 ॥

আকারত্রয়সম্পন্ন্য নারাষণপদাপ্রিতা।  
শ্রীমদষ্টাঙ্করীমন্ত্ররাজস্থিতমনোরথা ॥ 6 ॥

মোক্ষপ্রদাননিপুণা মনুরত্নাধিদেবতা।  
ব্রহ্মণ্যা লোকজননী লীলামানুষরূপিণী ॥ 7 ॥

ব্রহ্মজ্ঞানপ্রদা মাযা সচ্চিদানন্দরিগ্রহা।  
মহাপতিব্রতা রিষুগুণকীর্তনলোলুপা ॥ 8 ॥

প্রপন্নার্তিহরা নিত্য্য রেদসৌধরিহারিণী।  
শ্রীরঙ্গনাথমাণিক্যমঞ্জরী মঞ্জুভাষিণী ॥ 9 ॥

পদ্মপ্রিয়া পদ্মহস্তা রেদান্তদ্বয়বোধিনী।  
সুপ্রসন্না ভগবতী শ্রীজনার্দনদীপিকা ॥ 10 ॥

সুগন্ধারযরা চারুরঙ্গমঙ্গলদীপিকা।  
ধ্বজরজ্রাক্ষুশাজাক্ষমৃদুপাদলতাঞ্চিতা ॥ 11 ॥

তারকাকারনখরা প্ররালমৃদুলাঙ্গুলী।  
কূর্মোপমেঘপাদোর্ধ্বভাগা শোভনপার্শ্বিকা ॥ 12 ॥

রেদার্থভারতত্ত্বজ্ঞা লোকারাধ্যাভিহ্নপঙ্কজা।  
আনন্দবুদুদাকারসুগুন্ডা পরমাহণুকা ॥ 13 ॥

তেজঃপ্রিয়োজ্জ্বলধৃতপাদাঙ্গুলিসুভূষিতা।  
মীনকেতনতুণীরচারুজঙ্ঘারিরাজিতা ॥ 14 ॥

ককুদ্বজ্জানুযুগ্মাঢ্যা স্বর্ণরম্ভাভসকিথকা।  
বিশালজঘনা পীনসুশ্রোণী মণিমেখলা ॥ 15 ॥

আনন্দসাগরার্তগম্ভীরাম্ভোজনাভিকা।  
ভাস্বদ্বলিত্রিকা চারুজগৎপূর্ণমহোদরী ॥ 16 ॥

নররল্লীরোমরাজী সুধাকুস্তাযিতস্তনী।  
কল্পমালানিভভুজা চন্দ্রখণ্ডনখাঞ্চিতা ॥ 17 ॥

সুপ্ররাশাঙ্গুলীন্যস্তমহারত্নাঙ্গুলীযকা।  
নরারুণপ্ররলাভপাণিদেশসমঞ্চিতা ॥ 18 ॥

कम्बुकण्ठी सुचुबुका विम्वोष्ठी कुन्ददन्तयुक्।  
कारुण्यरसनिस्यन्दनेत्रद्वयसुशोभिता ॥ 19 ॥

मुक्ताशुचिस्मिता चारुचास्पेयनिभनासिका।  
दर्पणाकाररिपुलकपोलद्वितयाङ्गिता ॥ 20 ॥

अनन्तार्कप्रकाशोद्यन्मणिताटङ्कशोभिता।  
कोटिसूर्याग्निसक्लाशनानाभूषणभूषिता ॥ 21 ॥

सुगन्धरदना सुद्र अर्धचन्द्रललाटिका।  
पूर्णचन्द्रानना नीलकुटिलालकशोभिता ॥ 22 ॥

सौन्दर्यसीमा रिलसंकसुरीतिलकोज्ज्वला।  
धगद्गगायमानोद्यन्मणिसीमन्तभूषणा ॥ 23 ॥

ज्वाज्वल्यमानसद्रत्नदिर्यचूडारतंसका।  
सूर्यार्धचन्द्ररिलसंक भूषणाङ्गितरेणिका ॥ 24 ॥

अत्यर्कानलतेजोधिमणिकण्ठकधारिणी।  
सद्रत्नाङ्गितरिद्योतरिद्युङ्कुण्डलाशटिका ॥ 25 ॥

नानामणिगणकीर्णहेमाङ्गदसुभूषिता।  
कुङ्कुमागरुकसुरीदिर्यचन्दनचर्चिता ॥ 26 ॥

स्त्रोचितौज्ज्वल्यरिधिरिचित्रमणिहारिणी।  
असङ्ख्यसुखस्पर्शसर्वातिशयभूषणा ॥ 27 ॥

मल्लिकापारिजातादिदिर्यपुष्पस्रगङ्गिता।  
श्रीरङ्गनिलया पूज्या दिर्यदेशसुशोभिता ॥ 28 ॥

॥ इति श्री गोदाष्टौत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥